Bank and its types

B.A 2nd year
Paper 1
By:-
Dr. A.K.Gupta
HOD
Prof. Sanjay Shrivastava
Prof.Rashmi Singh
Dr.Saurav Sharma (Guest Faculty)

Department of Economics
P.G.COLLEGE
DATIA (M.P.)

बैंक का अर्थ एवं प्रकार

[MEANING AND TYPES OF BANKS]

'बैंक' (Bank) शब्द की उत्पत्ति इटेलियन भाषा के 'Banco' (बैंकों) शब्द से हुई है। यह शब्द 'फ्रेंच' भाषा के (Banke) (बैंके) में बदलता हुआ अंग्रेजी भाषा में 'Bank' (बैंक) हो गया। Banco का अर्थ बैंच से है। पहले जमाने में इटली में लोग बैंचों पर बैठकर मुद्रा-परिवर्तन का कार्य करते थे। जब उनमें से किसी का व्यापार बन्द हो जाता था, तब उसकी बैंच को तोड़ दिया जाता था। इसी से बाद में 'बैंक' शब्द का प्रयोग मुद्रा का लेन-देन करने वाली संस्थाओं के लिए किया जाने लगा। एक अन्य धारणा के अनुसार, 'बैंक' शब्द की उत्पत्ति जर्मनी भाषा के 'Banck' (बैंक) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ **सम्मिलित स्कंध कोष** (Joint Stock Fund) होता है। **मैक्लिआड** (Macleod) के अनुसार, **'बैंक'** शब्द अनेक व्यक्तियों द्वारा एकत्रित किये गये एक सामूहिक कोष को सूचित करता है। इस प्रकार 'बैंक' शब्द की उत्पत्ति के बारे में निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है, किन्तु यह कहा जा सकता है कि आधुनिक बैंकों का आरम्भ यूरोप में ही हुआ था, जो बाद में क्रमशः पूरे संसार में फैल गये।

बैंक की परिभाषाएँ

(Definitions of Banks)

वर्तमान युग में बैंक शब्द अत्यधिक व्यापक हो गया है इसीलिए इसकी परिभाषा देना कठिन है फिर भी अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से बैंक की परिभाषाओं को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है—(अ) साख व्यवसाय पर आधारित परिभाषाएँ, (ब) वैधानिकता पर आधारित परिभाषाएँ, (स) कार्य पर आधारित परिभाषाएँ।

(अ) साख व्यवसाय पर आधारित परिभाषाएँ

प्रो. फिण्डले शिराज (Findlay Shirras) के अनुसार, ***''बैंकर वह व्यक्ति, फर्म या कम्पनी है, जिसके पास व्यवसाय के लिए ऐसा स्थान हो जहाँ मुद्रा अथवा करैंसी की जमा द्वारा साख का कार्य किया जाता है और जिसकी जमा का ड्राफ्ट, चेक या आर्डर द्वारा भुगतान किया जाता है अथवा जहाँ स्टॉक, बॉण्ड, धातुओं और विपत्रों पर मुद्रा उधार दी जाती है अथवा जहाँ विनिमय बिलों, ऋण-पत्रों को बट्टे पर बेचने के लिए स्वीकार किया जाता है।''***।

प्रो. क्राउथर (Crowther) के अनुसार, ***''बैंकर अपने तथा अन्य लोगों के ऋणों का व्यवसायी होता है; अर्थात् बैंकर का व्यवसाय अन्य लोगों से ऋण लेना और बदले में अपने ऋण देना और इस प्रकार मुद्रा का सृजन करना।''***

Scanned with CamScanner

प्रो. सेयर्स (Sayers) के अनुसार, ***''बैंक वह संस्था है जिसके ऋणों को अन्य व्यक्तियों के पारस्परिक भुगतान के लिए विस्तृत रूप से स्वीकार किया जाता है।''***

उपर्युक्त परिभाषाओं के अनुसार बैंक का सबसे महत्वपूर्ण कार्य साख निर्माण करना है जो पूर्णत सही नहीं है। वह अन्य अनेक महत्वपूर्ण कार्य भी करती है।

(ब) वैधानिकता पर आधारित परिभाषाएँ

भारतीय बैंकिंग कम्पनीज एक्ट, 1949 (Indian Banking Companies Act, 1949) के अनुसार, ***''बैंकिंग से तात्पर्य ऋण देने अथवा विनियोजन के लिए जनता का धन जमा करना है, जो माँग करने पर लौटाया जा सकता है तथा चेक, ड्राफ्ट अथवा अन्य प्रकार की आज्ञा द्वारा निकाला जा सकता है।''***[1]

ब्रिटिश विनिमय बिल अधिनियम—बैंक के अन्तर्गत बैंकिंग व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों का एक समूह (नियमित और अनियमित) शामिल होता है।

उक्त परिभाषाएँ बैंक शब्द का सही अर्थ नहीं देती हैं। इनमें बैंक के सम्पूर्ण कार्यों को शामिल नहीं किया गया है।

(स) कार्य पर आधारित परिभाषाएँ

प्रो. ए.जी. हर्ट—***''बैंक वह है जो अपने साधारण व्यवसाय में धन प्राप्त करता है तथा जिससे वह उन व्यक्तियों के चैकों का भुगतान करता है, जिनसे या जिनके खातों में वह धन प्राप्त करता है।''***[2]

प्रो. सरजान पेजट—***''कोई भी संस्था तब तक बैंक नहीं कही जा सकती जब तक कि वह सामान्य जनता की राशि जमा न करे, उसके नाम पर चालू खाते न खोले और अपने ग्राहकों का भुगतान एवं संकलन न करे।''***

प्रो. गिलबर्ट—***''बैंक पूँजी अथवा सही शब्दों में मुद्रा का व्यवसाय है।''***

उपर्युक्त परिभाषाओं में बैंक के चालू व स्थायी जमा करने, चैकों का भुगतान तथा चैकों का संग्रह करने के कार्य को अधिक महत्वपूर्ण माना है, किन्तु इनमें बैंकें ऋण देने एवं साख सम्बन्धी कार्यों को भुला दिया गया है। इसलिए ये परिभाषाएँ सर्वमान्य नहीं हैं।

उचित परिभाषा (Proper Definition)—उपर्युक्त सभी परिभाषाओं को दोषपूर्ण माने जाने से वैब्स्टर शब्द कोष में उल्लेखित परिभाषा को अधिक उचित माना जाने लगा है जो अग्रलिखित हैं—

वेब्स्टर शब्दकोष—***''बैंक वह संस्था है जो द्रव्य में व्यवसाय करती है, एक ऐसा प्रतिष्ठान है जहाँ धन, जमा, संरक्षण एवं निर्गमन होता है तथा ऋण एवं कटौती की सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं और एक स्थान से दूसरे स्थान पर रकम भेजने की व्यवस्था की जाती है।''***

उपर्युक्त परिभाषाओं में भी ''द्रव्य में व्यवसाय'' एक अत्यधिक व्यापक शब्द है। इस दशा में बैंक की उचित परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है—

''बैंक एक ऐसी संस्था है जो अपने ग्राहकों के लिए धन से सम्बन्धित सभी प्रकार के लेन-देन का कार्य करती है।''

---

1 "Banking means the accepting for the purpose of lending and investment of deposit of money from the public repayable on demand or otherwise and withdrawable by cheque, draft, order or otherwise." —*The Indian Companies Act.* 1949; *Section* 5.

Scanned with CamScanner

बैंक की विशेषताएँ

प्रो. सरजान पेजेट के अनुसार किसी संस्था या व्यक्ति को बैंक होने के लिए निम्नलिखित विशेषताएँ होना आवश्यक है—

(1) **मुख्य व्यवसाय**—बैंक अथवा बैंकर वह व्यक्ति या संस्था है जो मुख्य रूप से बैंकिंग के कार्य करती है। यदि उसका आर्थिक लेन-देन का कार्य गौण हो तो वह बैंक नही है।

(2) **प्रसिद्धि एवं प्रतिष्ठा**—बैंकर या बैंक वही व्यक्ति या संस्था होना है जो समाज में बैंकर के कार्यों के लिए प्रतिष्ठित हो।

(3) **आय का साधन**—कोई व्यक्ति या संस्था उसी दशा में बैंक होती है जब उसकी आय का एकमात्र साधन बैंकिंग व्यवसाय हो। यदि वह व्यक्ति या संस्था इस व्यवसाय को जीवन निर्वाह के मुख्य साधन के रूप में नही अपनाता है तो वह बैंकर है।

बैंकों के प्रकार तथा उनके कार्य

(Types of Banks and their Functions)

विभिन्न बैंक अपने उद्देश्यों के अनुसार स्थापित की जाती है और वे उन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ही कार्य करती है। इस प्रकार उद्देश्यों और कार्यों के आधार पर बैंक निम्न प्रकार के होते है—

1. व्यापारिक या वाणिज्यिक बैंक (Commercial Banks)

व्यापारिक बैंक वह है जो एक व्यापारिक संस्थान के आधार पर लाभ के उद्देश्य से स्थापित किये जाते है। **प्रो. क्राउथर** के शब्दों में, ***''व्यापारिक बैंक वह संस्था है जो स्वयं की तथा जनता की साख का व्यापार करती है।''*** **ऑक्सफोर्ड शब्दकोश** के अनुसार, ***''व्यापारिक बैंक वह संस्थान है जो ग्राहक के आदेश पर उसके धन की सुरक्षा करती है।''*** इस क्रम में जिस तरह उत्पादक कच्चा माल क्रय करके उसे निर्मित माल में बदलकर बाजार में बेचकर लाभ कमाता है उसी प्रकार व्यापारिक बैंक भी जनता से धन लेकर साख का निर्माण कर जनता को ही बेचकर लाभ कमाता है। यह याद रहे कि विभिन्न प्रकार के सभी बैंकों में व्यापारिक बैंक ही सबसे प्राचीन है।

व्यापारिक बैंकों का संगठन (Organisation of Commercial Banks)—व्यापारिक बैंकों को संगठन की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किया जाता है—(अ) इकाई बैंकिंग, (ब) शाखा बैंकिंग।

(अ) **इकाई बैंकिंग** (Unit banking)—इकाई बैंकिंग में एक बैंक का एक ही कार्यालय होता है, लेकिन कुछ विशेष दशाओं में इसकी कुछ शाखाएँ अन्यत्र भी खोली जा सकती है। यह प्रणाली अमेरिका में सर्वाधिक लोकप्रिय है।

इकाई बैंकिंग के गुण—(i) इसके प्रबन्ध एवं निरीक्षण में सुविधा होती है, (ii) यह स्वतन्त्र व्यवसाय को महत्व देती है, (iii) यह स्थानीय प्राथमिकताओं को महत्व देती है, (iv) इसमें धोखे या जालसाजी की सम्भावना कम होती है, (v) बैंकिंग व्यवसाय की एकाधिकारी प्रवृत्ति को रोकती है, (vi) इसमें काम शीघ्र व कुशलता से होता है, (vii) कर्मचारियों में उत्साह रहता है, (viii) अकुशल शाखाएँ व बैंके स्वयं समाप्त हो जाती हैं।

इकाई बैंकिंग के दोष—(i) श्रम-विभाजन व विशिष्टीकरण का अभाव रहता है, (ii) स्थानीय आर्थिक समस्याएँ बैंक व्यवहार को प्रभावित करती हैं, (iii) बैंकों के विस्तार में असुविधा होती है, (iv) पूँजी का हस्तान्तरण कम मात्रा में होता है, (v) ब्याज-दरों में असमानता होती है, (vi) जोखिम एक ही बैंक को उठानी पड़ती है, (vii) कार्य-क्षेत्र सीमित होता है।

(ब) **शाखा बैंकिंग** (Branch Banking)—जब एक बैंक की एक से अधिक (अनेक) शाखाएँ होती है और सम्पूर्ण देश में फैली होती हैं तब इसे शाखा बैंकिंग प्रणाली कहते हैं।

शाखा बैंकिंग प्रणाली के गुण—(i) इसमें धन का हस्तान्तरण सरलता से होता है, (ii) नकद कोषों

Scanned with CamScanner

की बचत होती है, (iii) कर्मचारियों को उत्तम प्रशिक्षण देना सम्भव होता है, (iv) सम्पूर्ण देश में ब्याज-दर समान होती है, (v) बैंकिंग सेवाओं का विस्तार होता है, (vi) साधनों का उत्पादक एवं लाभप्रद उपयोग होता है, (vii) बड़े पैमाने के उत्पादन के लाभ मिलते हैं, (viii) श्रम-विभाजन का लाभ मिलता है, (ix) जोखिम का भौगोलिक वितरण होता है।

शाखा बैंकिंग के दोष—(i) ग्राहकों से व्यक्तिगत सम्पर्क नहीं होता है, (ii) प्रबन्धन, निरीक्षण एवं नियन्त्रण में कठिनाई होती है, (iii) कमजोर व अलाभप्रद शाखाएँ अस्तित्व में रहती हैं, (iv) यह अत्यधिक खर्चीली है, (v) इसमें लोच का अभाव होता है, (vi) विदेशों में शाखाएँ स्थापित करना कठिन होता है, (vii) स्थानीय एवं क्षेत्रीय आवश्यकताएँ उपेक्षित हो जाती हैं, (viii) धन गलत क्षेत्रों में जाने की सम्भावनाएँ रहती है, (ix) लोच एवं प्रेरणा का अभाव रहता है, (x) एकाधिकारी प्रवृत्ति बढ़ती है।

व्यापारिक बैंकों के कार्य (Functions of Commercial Banks)—व्यापारिक बैंकों के मुख्य कार्य निम्नलिखित है—

(1) **जमा स्वीकारना**—ये बैंकें अपने ग्राहकों की जमा (निक्षेप) को स्वीकार करती है। इन जमा राशियों को जमाकर्ताओं के आदेशानुसार चुकाती भी हैं। व्यापारिक बैंक (i) चालू खाता, (ii) स्थायी बचत खाता, (iii) बचत खाता, (iv) गृह बचत खाता, (v) अनिश्चितकालीन खाता आदि खोलकर उनमें ग्राहकों की राशि जमा करती है।

(2) **ऋण एवं अग्रिम ऋण देना**—व्यापारिक बैंकें ग्राहकों को (i) साधारण और अग्रिम ऋण, (ii) नकद साख, (iii) अधिविकर्ष, (iv) विदेशी विपत्रों आदि को भुनाकर ऋण देती है।

(3) **एजेण्ट सम्बन्धी कार्य**—व्यापारिक बैंक एजेण्ट के रूप में धन का हस्तान्तरण, ग्राहकों की ओर से भुगतान एवं उनके धन को एकत्रित करने का काम भी करती है।

(4) **अन्य कार्य**—व्यापारिक बैंक उपर्युक्त कार्यों के अलावा, विदेशी विनिमय का क्रय-विक्रय, सरकार के बैंकिंग सम्बन्धी कार्य, प्रशिक्षण, साख सुविधा, आदि कार्य भी करती है।

उल्लेखनीय है कि व्यापारिक बैंकों के कार्यों का विस्तृत अध्ययन अगले अध्याय मे किया गया है।

2. औद्योगिक बैंक (Industrial Banks)

आधुनिक युग में औद्योगीकरण को आर्थिक विकास की कुंजी माना गया है। विशिष्टीकरण, श्रम-विभाजन ने लाभ की मात्रा को बढ़ाया, जिससे बड़े पैमाने के उद्योगों के लिए पूँजी की भारी मात्रा जुटाना आवश्यक हो गया। अत: उद्योगो को भारी मात्रा मे, दीर्घकालीन ऋण उपलब्ध कराने के उद्देश्य से औद्योगिक बैंकों की स्थापना की गई।

औद्योगिक बैंकों के कार्य—ये कार्य निम्नलिखित हैं—

(1) **दीर्घकालीन जमाएँ स्वीकार करना**—ये बैंक ग्राहकों को दीर्घकालीन ऋण देते हैं इसीलिए दीर्घकालीन जमाएँ भी स्वीकार करते है।

(2) **दीर्घकालीन साख की पूर्ति**—बड़े पैमाने के उद्योग सामान्यत: दीर्घकाल के बाद उत्पादन देते है अत: वे दीर्घकाल अर्थात् 15 से 20 वर्षों के लिए ऋण माँगते है। इस ऋण की पूर्ति औद्योगिक बैंक ही करते हैं। बड़े उद्योगो को भूमि क्रय करने, भवन बनाने, भारी मशीनें क्रय करने, स्थायी व अस्थायी श्रमिको को वेतन देने आदि कार्यों के लिए दीर्घकालीन साख का आवश्यकता होती है।

(3) **निर्यात हेतु सहायता**—औद्योगिक बैंक निर्यात में निम्न प्रकार से सहायता देते हैं—(i) वे निर्यात हेतु प्रत्यक्ष ऋण देते है, (ii) निर्यात साख के लिए पुनर्वित्त प्रदान करते है, (iii) सरकार के अनुमोदन पर विदेशी मुद्रा में भी ऋण देते हैं, (iv) निर्यात पर गारन्टी भी देते है।

(4) **औद्योगिक प्रबन्ध में भागीदारी**—जर्मनी की तरह भारत में भी औद्योगिक बैंक ऋण लेने वाली कम्पनी के प्रबन्ध में भाग लेकर उस पर नियन्त्रण रखती है।

Scanned with CamScanner

(5) **अन्य कार्य**—उपर्युक्त कार्यों के अलावा ये बैंक—कम्पनियों के शेयरों के विज्ञापन करने, उन्हें बेचने, उनका अभिगोपन करने तथा नियोक्ताओं को विभिन्न कम्पनियों में निवेश करने या न करने सम्बन्धी कार्य भी करते हैं।

3. कृषि बैंक (Agricultural Banks)

कृषि-व्यवस्था, व्यापार तथा उद्योग-धन्धों से भिन्न होती है। अत: इसकी ऋण सम्बन्धी आवश्यकताएँ व्यापार तथा उद्योग-धन्धों की ऋण सम्बन्धी आवश्यकताओं से भिन्न होती है। किसान को दो प्रकार के ऋणों की आवश्यकता होती है—**प्रथम** किसान को बीज, खाद, औजार आदि खरीदने के लिए अल्पकालीन ऋण की आवश्यकता होती है और **द्वितीय** भूमि में स्थायी सुधार के लिए सिंचाई की व्यवस्था करने के लिए तथा भारी यन्त्रों को खरीदने के लिए दीर्घकालीन ऋण की आवश्यकता होती है। चूँकि कृषक ऋण प्राप्त करने के लिए उस प्रकार की जमानत नहीं दे पाते, जिस प्रकार की जमानत की माँग वाणिज्यिक एवं औद्योगिक बैंक करते है, अत: किसानों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए कृषि बैंक की स्थापना की गयी है।

कृषि बैंक के प्रकार—कृषि बैंक मुख्य रूप से निम्न प्रकार के होते है—

(अ) **कृषि सहकारी बैंक** (Agricultural co-operative bank)—कृषि सहकारी बैंक किसानों की अल्पकालीन ऋण सम्बन्धी आवश्यकता को पूरा करता है। भारत में कृषि सहकारी बैंक की स्थापना निम्न प्रकार से की गयी है। ग्राम स्तर पर प्राथमिक सहकारी साख समितियाँ होती है। गाँव के 10 अथवा 10 से अधिक व्यक्ति मिलकर सहकारी साख समिति स्थापित कर सकते है। इस समिति की पूँजी प्रवेश शुल्कों, अंशों की बिक्री, जनता एवं सदस्यों से जमा किये गये निक्षेपों, सुरक्षित कोषों, केन्द्रीय तथा राज्य सहकारी बैंकों से लिये गये ऋणों से प्राप्त होती है। समिति के सदस्य इससे अल्पकालीन ऋण प्राप्त करते है। इन समितियों के ऊपर सहकारी संघ (Co-operative unions) होते है और ये सहकारी समितियाँ इन संघों से सम्बद्ध होती है। सहकारी संघों के ऊपर केन्द्रीय सहकारी बैंक (Central co-operative banks) होते है। ये सहकारी बैंक, सहकारी संघों को ऋण स्वीकृत करते है। सामान्यतया प्रत्येक जिले में एक जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक होता है। इन केन्द्रीय सहकारी बैंकों के ऊपर राज्य सहकारी बैंक (State co-operative bank) होता है, जो इन जिला केन्द्रीय सहकारी बैंकों की ऋण सम्बन्धी आवश्यकता को पूरा करता है। इन राज्य सहकारी बैंकों के ऊपर रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया का कृषि साख विभाग होता है, जो राज्य सहकारी बैंकों को ऋण प्रदान करता है।

(ब) **भूमि विकास बैंक** (Land development banks)—भूमि विकास बैंक किसानों को दीर्घकालीन ऋण देता है। इन्हें पहले 'भूमि बन्धक बैंक' (Land mortgage bank) कहते थे। इसका कारण यह था कि ये बैंक भूमि को बन्धक के रूप में रखकर किसानों को 15 से 20 वर्ष की लम्बी अवधि के लिए ऋण देता था, किन्तु अब इसे भूमि विकास बैंक कहा जाता है। भूमि विकास बैंक भूमि में सुधार करने, कुआँ, नलकूप लगाने, ट्रैक्टर जैसी भारी मशीनों को खरीदने, अतिरिक्त भूमि खरीदने के लिए कम ब्याज दर पर 15 से 20 वर्ष की अवधि के लिए ऋण देता है। ये ऋण आसान किस्तों में वसूल किये जाते है। किसानों को यह ऋण तभी मिलता है, जबकि पहले के ऋणों का भुगतान कर चुके हों।

(स) **क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक** (Regional rural banks)—क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की स्थापना वर्ष 1975 में की गयी है। इस बैंक को स्थापित करने के मुख्य उद्देश्य छोटे एवं सीमान्त कृषकों, कृषि-श्रमिकों, ग्रामीण शिल्पकारों एवं छोटे उद्यमियों को ऋण प्रदान करना है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि, व्यापार, व्यवसाय, उद्योग एवं अन्य उत्पादक कार्यों का विकास किया जा सके, जिससे इन कमजोर वर्गों की आय बढ़ायी जा सके और उन्हें गरीबी से ऊपर उठाया जा सके।

(द) **राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक** (National bank for agricultural and rural development, NABARD)—भारत सरकार ने जुलाई, 1982 में राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक की स्थापना की है। रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया प्रारम्भ से ही कृषि विकास पर विशेष रुचि लेता रहा है। कृषि-साख की व्यवस्था करने के लिए इसने एक पृथक् विभाग की स्थापना की थी। रिजर्व बैंक अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन कृषि-साख की व्यवस्था राज्य सरकारी बैंकों और राज्य भूमि विकास बैंकों को ऋण देकर करता था।

Scanned with CamScanner

कृषि-साख की व्यवस्था करने के लिए रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा **'कृषि पुनर्वित्त विकास निगम'** (Agricultural Refinance Development Corporation) की स्थापना की गयी थी।

(य) कृषि विकास एवं ग्रामीण विकास की महत्वपूर्ण आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जुलाई, 1982 में 100 करोड़ रुपये की पूँजी से राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) की स्थापना की गयी। NABARD कृषि विकास के लिए राज्य सहकारी बैंकों को अल्पकालीन ऋण देता है। भूमि सुधार एवं विकास के लिए राज्य भूमि विकास बैंक को दीर्घकालीन ऋण प्रदान करता है तथा ग्रामीण क्षेत्र में कमजोर वर्गों की सहायता करने के लिए क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को ऋण प्रदान करता है। इस प्रकार NABARD कृषि पुनर्वित्त विकास निगम के कार्यों को सम्पादित कर रहा है।

वर्तमान में NABARD की दो महत्वपूर्ण भूमिकाएँ है—

(i) अपेक्स संस्था (Apex Institution) के रूप में,

(ii) पुनर्वित्त संस्था के रूप में (As a Refinance Institution)।

NABARD ने अपेक्स सस्था का कार्य रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया से प्राप्त किया है। इसके अन्तर्गत यह राज्य सहकारी बैंकों एवं राज्य भूमि विकास बैंकों के लिए अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन कृषि-साख की व्यवस्था करता है।

NABARD ने कृषि पुनर्वित्त विकास निगम (ARDC) के उत्तरदायित्वों को भी स्वीकार कर लिया है। इसके अन्तर्गत यह कृषि एवं ग्रामीण विकास के लिए ऋण देने वाली सभी संस्थाओं एवं बैंकों को पुनर्वित्त सम्बन्धी सुविधाएँ प्रदान करता है। पुनर्वित्त संस्था के रूप में यह एकीकृत ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने के लिए कृषि, लघु उद्योगों, कुटीर एवं ग्रामीण उद्योगों, हस्त-करघा, ग्रामीण शिल्पकारों को ऋण देने की व्यवस्था करता है।

4. विदेशी विनिमय बैंक (Foreign Exchange Banks)

विदेशी मुद्राओं का लेन-देन तथा विदेशी व्यापार के लिए वित्त की व्यवस्था करने वाली संस्थाओं को **विदेशी विनिमय बैंक** (Foreign exchange bank) कहा जाता है। ये बैंक अपनी शाखाएँ विदेशों में स्थापित करते है, जिससे विदेशी मुद्राओं का लेन-देन का कार्य सरल हो सके। इन कार्यों को सुचारु रूप से चलाने के लिए अधिक पूँजी एवं कुशल कर्मचारियों की आवश्यकता होती है। वर्तमान समय में विनिमय बैंक, वाणिज्यिक बैंकों के समान बैंकों के अन्य कार्य भी करते है। इसके विपरीत, वाणिज्यिक बैंक भी विनिमय बैंकों के कार्य करते है। इसीलिए ऐसे बैंक जो अन्य बैंकिंग कार्यों के साथ-साथ विदेशी विनिमय का लेन-देन करते हैं, विदेशी विनिमय बैंक कहलाते है।

विदेशी विनिमय बैंकों के कार्य—इनके कार्य निम्नलिखित है—

(1) **विनिमय बिलों का क्रय-विक्रय**—ये बैंक विदेशी विनिमय बिलों का क्रय-विक्रय करके अन्तर्राष्ट्रीय भुगतानों को चुकाते है। इस सन्दर्भ में यह बैंक इस तरह कार्य करता है—जब किसी देश की विनिमय की एक शाखा विनिमय बिल क्रय करती है तथा उसका भुगतान सम्बन्धित देश की मुद्रा में करती है तब वह शाखा विदेश में स्थित अपनी शाखा को वह बिल भेजती है और वह शाखा उस बैंक को जिसके नाम पर विनिमय बिल रखा गया है, धन वसूल कर लेती है। इस कार्यविधि में विभिन्न देशों में मुद्रा का हस्तान्तरण नही होता है तथा मुद्रा के बिना ही अन्तर्राष्ट्रीय भुगतान सरलता से हो जाते हैं।

(2) **विदेशी विनिमय का क्रय-विक्रय करना**—ये बैंक विदेशी विनिमय का क्रय-विक्रय करते है। इससे वह विदेशी बाजारों में विनिमय दर के उच्चावचनों को रोकती है। ये बैंक विनिमय दरों में होने वाले परिवर्तनों से व्यापारियों को जोखिम से बचाती है।

(3) **विदेशी ऋणों का भुगतान**—ये बैंक सोना-चाँदी एवं प्रतिभूतियों का आयात-निर्यात करके अन्तर्राष्ट्रीय ऋणों का भुगतान करने में भी सहायता करते हैं।

(4) **अन्य कार्य**—ये बैंक उक्त कार्यों के अलावा निम्नलिखित कार्य भी करते है—(i) निक्षेप स्वीकार

Scanned with CamScanner

करना, (ii) ऋण प्रदान करना, (iii) अन्तर्राष्ट्रीय ऋणों का भुगतान करना, (iv) विनिमय दरों में होने वाले परिवर्तनों को रोकना, (v) प्रतिभूतियों का आयात-निर्यात करना, (vi) अग्रिम विनिमय व्यापार करना। उक्त सभी कार्यों से विदेशी विनिमय बैंक व्यापारियों की जोखिम कम करने का प्रयास करते है।

5. केन्द्रीय बैंक (Central Bank)

आधुनिक बैंकिंग व्यवस्था मे केन्द्रीय बैंक आर्थिक क्रियाओं की धुरी बन गया है। केन्द्रीय बैंक देश की बैंकिंग व्यवस्था को नियमित एवं नियन्त्रित करने, साख एवं नोटो की मात्रा पर अंकुश रखने, सरकार की राजकोषीय नीतियों से मौद्रिक नीतियों का समन्वय बनाने सम्बन्धी कार्य करता है। सन् 1694 में 'बैंक ऑफ इग्लैण्ड' की प्रथम केन्द्रीय बैंक के रूप में स्थापना की गई। 1920 के ब्रूसेल्स सम्मेलन के बाद विश्व के सभी देशो मे केन्द्रीय बैंकों की स्थापना की जा चुकी है। विश्व के सभी केन्द्रीय बैंकों के कार्यों में सैद्धान्तिक समानता है, किन्तु व्यावहारिक नीतियों में बड़े अन्तर दिखाई देते है। केन्द्रीय बैंक के सम्बन्ध मे विस्तृत अध्ययन अगले अध्याय में किया गया है।

केन्द्रीय बैंक के मुख्य कार्य—निम्नलिखित है—

(i) उसे नोट निर्गमन का एकाधिकार होता है, (ii) यह बैंकों का अन्तिम ऋणदाता है, (iii) बैंकों का बैंक होता है, (iv) सरकार का बैंक, एजेन्ट एवं सलाहकार होता है, (v) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राओं के राष्ट्रीय कोष का संरक्षक होता है, (vi) साख नियन्त्रण के सभी कार्य करता है।

6. बचत बैंक (Saving Banks)

पाश्चात्य देशों में कम एवं निश्चित आय वाले लोगों की बचत को प्रोत्साहन देने के लिए बचत बैंक स्थापित किये जाते है। ये बैंक वाणिज्यिक बैंक के सहायक के रूप में कार्य करते है। भारत में वाणिज्यिक बैंक जनता के बचत खातो का स्वयं ही संचालन करते हैं। अत: अलग से बचत बैंक स्थापित नही किये गये है। भारत में डाकखाने में भी लोगों की बचतों को स्वीकार किया जाता है तथा उस पर ब्याज दिया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रो मे जहाँ बैंक नहीं है पोस्ट ऑफिस सेविंग्स बैंक बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि ये ही बचत बैंकों के कार्य करते हैं।

7. देशी बैंकर्स (Indigenous Bankers)

ये विश्व के सभी देशों में लेन-देन का काम करते है। इन्हे भारत में महाजन, सर्राफ, साहूकार आदि कहते है जो देश की कुल ऋण आवश्यकता मे 50 से 60 भाग की पूर्ति करता है।

इनके प्रमुख कार्य—(i) भूमि, सोना, चाँदी गिरवी रखकर ऋण देना, (ii) ये उत्पादक एवं अनुत्पादक दोनों प्रकार के ऋण देते है, (iii) ये हुण्डियों पर भी ऋण देते है, (iv) ये अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन दोनों प्रकार के ऋण देते है, (v) ऋण लेने वालों से इनके निकट सम्बन्ध होते है, (vi) ये नकद धन के अलावा वस्तुओं के रूप में भी ऋण देते है, किन्तु उनका मूल्यांकन मुद्रा में ही किया जाता है।

8. अन्तर्राष्ट्रीय बैंक (International Banks)

अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक समस्याओं को हल करने के लिए कई बार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बैंक की स्थापना करने के सुझाव दिये गये। दूसरे विश्वयुद्ध में जर्मनी एवं मित्र देशों की आर्थिक समस्याओं को हल करने के लिए दो अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना की जिनके नाम है—(अ) अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, (ब) विश्व बैंक। इनके प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं—

Scanned with CamScanner

बैंकिंग अधिकारियों को प्रशिक्षण देता है, (vii) अन्तराष्ट्रीय आर्थिक विवादों को सुलझाने में सहायता करता है।

बैंकों का महत्व एवं उपयोगिता

(Importance and Utility of Banks)

आधुनिक युग में बैंक आर्थिक क्रियाओं की आधारशिला है। बैंक व्यापार, वाणिज्य, कृषि, उद्योग, व्यवसाय आदि की स्थापना और विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इनका महत्व अथवा उपयोगिता निम्नलिखित है—

(i) **धन संग्रह करना** (Collection of money)—बैंकें समाज के सभी लोगों से बचत एकत्रित कर अपने कोष का निर्माण करती है। लोग अपने पास का धन, रुपया, बैंकों में जमा कराते हैं।

(ii) **धन उधार देना** (Gives loans)—जो धन बैंकें लोगों से बचत के रूप में प्राप्त करती है वह धन जरूरतमन्द लोगों को उधार देकर उसे उपयोगी बनाती हैं। इससे धन में उत्पादकता का सृजन करती है।

(iii) **मुद्रा का हस्तान्तरण** (Transfer of money)—बैंक मुद्रा को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने एवं एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को हस्तान्तरित करने का कार्य करती है। बैंकों के माध्यम से भारी से भारी राशियों का हस्तान्तरण करना, सरल, सस्ता, सुविधाजनक तथा सुरक्षात्मक होता है।

(iv) **साख मुद्रा का चलन** (Circulation of credit money)—बैंक लोगों की बैंकिंग आदत को प्रोत्साहित कर विधि ग्राह्य मुद्रा के स्थान पर साख मुद्रा को चलन में लाने का महत्वपूर्ण कार्य करती है।

(v) **मुद्रा प्रणाली में लोच** (Elasticity in monetary system)—वर्तमान समय में मुद्रा आर्थिक क्रियाओं की रक्तवाहिनी है। बैंक मुद्रा प्रणाली को लोचपूर्ण बनाकर आवश्यकतानुसार केन्द्रीय बैंक नोटों का निर्गमन करता है। इसी प्रकार व्यापारिक व अन्य बैंक धन एकत्रित करके तथा लोगों को उधार देकर मौद्रिक लोच को बनाये रखते हैं।

(vi) **भुगतान की सुविधा** (Facility of payments)—बैंकों के माध्यम से बड़ी राशियों को ही नहीं छोटी राशियों तक का भुगतान सरलता एवं सुविधा से हो जाता है।

(vii) **आन्तरिक और विदेशी व्यापार में सहयोग** (Helpful in internal and foreign trade)—बैंक आन्तरिक एवं विदेशी विनिमय बिलों का समय पूर्व भुगतान कर लोगों को मौद्रिक सहायता प्रदान करते हैं। इससे आन्तरिक और विदेशी व्यापार का विस्तार होता है।

(viii) **मूल्यवान वस्तुओं की सुरक्षा** (Safety of valuable commodities)—बैंक ग्राहकों को लाकर सुविधाएँ उपलब्ध कराते हैं जिनमें उनके मूल्यवान गहने एवं अन्य प्रकार की वस्तुएँ सुरक्षित रहती हैं।

(ix) **मूल्यों में स्थिरता** (Stability of Prices)—बैंकें साख मुद्रा की मात्रा में कमी या वृद्धि करके मूल्यों को स्थिर रखती हैं।

महत्वपूर्ण प्रश्न

Scanned with CamScanner

Thank you